धर्म का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and defination of Dharma)

धर्म का मानव समाज के साथ गहरा संबंध है। किंग्सले डेविस ने अपनी पुस्तक 'ह्यूमन सोसाइटी' (Human Society) में लिखा है। — "धर्म मानव समाज का ऐसा सर्वव्यापी स्थायी और शाश्वत तत्व है जिसे समझे बिना समाज के रूप को बिल्कुल भी नहीं समझा जा सकता।"

धर्म शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों पर अनेक अर्थों में किया गया है। सामान्यतः धर्म का आशय एक प्रकार के अधिमानवीय या अलौकिक शक्ति का विश्वास के रूप में लगाया जाता है जिसका आधार भय, श्रद्धा, भक्ति और पवित्रता की धारणा है तथा जिसकी अभिव्यक्ति सामान्यतः प्रार्थना, अर्चना पूजा आदि के द्वारा होती है।

ई॰ बी॰ टायलर के अनुसार :—

"धर्म आध्यात्मिक शक्ति पर विश्वास है।"

टायलर की परिभाषा से स्पष्ट होता है कि – (1) धर्म का संबंध विश्वास से है। (2) यह विश्वास आध्यात्मिक शक्ति के सन्दर्भ में है। अध्यात्मिक शक्ति मानवीय शक्ति से काफी श्रेष्ठ एवं शक्तिशाली है।

बी॰ मैलीनोवस्की :—

"धर्म क्रिया की एक विधि है और साथ ही विश्वासों की एक व्यवस्था भी, धर्म एक समाजशास्त्रीय तथ्य के साथ ही एक व्यक्तिगत अनुभव भी है।"

इनकी परिभाषा से चार बातें स्पष्ट होती हैं। (1) धर्म विश्वासों की एक व्यवस्था है। यह विश्वास किसी अलौकिक शक्ति, आत्मा परमात्मा और किसी पर हो सकता है। (2) प्रत्येक धर्म में विश्वासों से संबंधित कुछ क्रियाएँ होती हैं।

ये क्रियाएँ पूजा-पाठ, आराधना या प्रार्थना के रूप में होती है। (3) धर्म एक सामाजिक घटना है। (4) धर्म का संबंध व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभवों से है।

सर जेम्स फ्रेजर :—

"धर्म से मैं मनुष्य से श्रेष्ठ उन शक्तियों की संतुष्टि या आराधना समझता हूँ जिनके संबंध में यह विश्वास किया जाता है कि वे प्रकृति और मानव जीवन को मार्ग दिखलाती और नियंत्रित करती है।"

इनकी परिभाषा से तीन तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है — (1) धर्म का संबंध एक ऐसी शक्ति से है जो मानव-शक्ति से श्रेष्ठ है। (2) यह शक्ति (धर्म) प्रकृति तथा मानव जीवन को निर्देशित और नियंत्रित करती है। (3) मानव उस शक्ति को प्रसन्न रखने के लिए पूजा-पाठ, आराधना एवं प्रार्थना आदि करता है।

भारतीय संस्कृति में धर्म का अर्थ अंग्रेजी शब्द रिलीजन (Religion) के अर्थ से भिन्न है। 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है — धारण करना या बनाये रखना। इस दृष्टिकोण से जो तत्व सम्पूर्ण संसार के जीवन को धारण करता है, जिसके बिना संसार में व्यक्ति की स्थिति सम्भव नहीं होती तथा जिससे सभी कुछ संयमित और सुव्यवस्थित बना रहता है, वही धर्म है।

राधाकृष्णन :—

"जिन सिद्धान्तों के अनुसार हम अपना दैनिक जीवन व्यतीत करते है तथा जिसके द्वारा हमारे सामाजिक संबंधों की स्थापना होती है वही धर्म है, यह जीवन का सत्य है और हमारी प्रकृति को निर्धारित करनेवाली शक्ति है।"

उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट होता है कि धर्म जीवन को सम्पूर्णता प्रदान करने की एक विधि है।